gekj ;gk Ldy cx ugh gA

आज की मुख्यधारा की शिक्षा व्यवस्था के अन्दर शिक्षा बच्चों के लिए आनन्द का स्त्रोत नहीं बल्कि बोझ बन गई है। सुबह स्कूल जाने के लिए बच्चे एक दिन पहले शाम को अपना स्कूल बैग ठीक करते हैं, इस बैग में आठ विषयों की किताबें, कापी, रफ कापी, रबर, पेंसिल, पेन होता है। इन सारी चीजों को बैग में रखने के बाद इसका वजन इतना अधिक हो जाता है कि बच्चा स्वयं इसे उठाने में असमर्थ होता है।

ऐसा देखा गया है, कि स्कूल की पुस्तकें आज इतनी ज्यादा हैं, कि उन्हें ढोने के लिए अब बस्ते के स्थान पर पेटी ले जानी पड़ती है। साथ ही आज स्कूल और बच्चों के माता–पिता बच्चों को अधिकाधिक व्यस्त रखने का प्रयास करते है, ताकि बच्चे शरारत न करने पाएँ या खेलने में कम से कम समय दें। इसके लिए बच्चों को स्कूल से मिलने वाले गृहकार्य इतने अधिक होते है कि छुट्टी होते ही घर जाना चाहते है, कारण अन्हें अगले दिन के लिए आज ही सारा गृहकार्य खत्म करना होता है। इस तरह से बच्चे इतने व्यस्त हो जाते है कि उनके पास किसी और काम के लिए समय ही नहीं मिल पाता है।

ऐसा भी देखा गया है कि स्कूल जितना ही व्यवस्थित और अमीर होगा घर पर मिलने वाला काम उतना ही ज्यादा होता है। इस तरह से ज्ञान पाना बच्चों के लिए एक विवशता हो गई है।

परन्तु "उदय सामुदायिक पाठशाला" में बच्चे स्कूल बैग लेकर नहीं आते हैं, कारण यहाँ बच्चों के लिए किताबें, पेन, रबर, पेंसिल स्कूल में ही उपलब्ध होती हैं। साथ ही हमारी शिक्षा व्यवस्था भी इस प्रकार की है कि हर बच्चे के लिए एक अलग किताब की आवश्यकता नहीं होती है। बच्चे स्कूल सिर्फ अपनी रोटी लेकर आते हैं, बाकी चीजें उन्हें स्कूल में ही उपलब्ध होती है जिनका इस्तेमाल कर वे फिर उसे स्कूल में ही जमा कर देते है। बच्चे इन चीजों को मिल बाँट कर इस्तेमाल करते है। जैसे– यदि पाँच बच्चों के बीच एक रबर है, तो पाँचों मिलकर इसका इस्तेमाल करते है, और फिर स्कूल में ही जमा करा देते हैं। साथ ही हमारे स्कूल में बच्चों को गृहकार्य नहीं दिया जाता है, क्योंकि हमारा मानना है कि स्कूल में हुई छः घण्टे की पढ़ाई बच्चों के लिए पर्याप्त होती है।

इस तरह हमारे स्कूल में बच्चे शिक्षा को बोझ नहीं बल्कि आनन्द का स्त्रोत मानते है।

gekjs ;gk¡ Ldwy cSx ugha gSA